भूमिका

नाटक और रंगमंच की चर्चा संस्कृत नाटकों के समय से ही चली आ रही है। अनादि काल से हमारे समाज में नाट्य-मंचन की परम्परा रही है, परन्तु लिखित रूप में इसका विवरण सर्वप्रथम हमें भरतमुनि द्वारा रचित '*नाट्यशास्त्र*' में ही मिलता है। संस्कृत रंगमंच में तीन तत्व प्रमुख मानें गये हैं – वस्तु, रस और अभिनेता। इस अवधारणा के अनुसार अभिनेता को ही रंगमंच का प्रमुख और अनिवार्य तत्व माना गया है। इसके विपरीत पाश्चात्य रंगमंच में इन तत्वों के अतिरिक्त एक अन्य महत्वपूर्ण कारक भी होता है और वह है – निर्देशक। यद्यपि संस्कृत नाटकों में नाटककार विदूषक नामक पात्र की सृष्टि करते थे, जो दर्शकों से सीधे संवाद स्थापित करता था। मंच पर आकर, आगे होने वाले घटनाक्रम से दर्शकों को अवगत कराता था। कई रंग-समीक्षक यह मानते हैं कि संस्कृत नाटकों का विदूषक ही निर्देशक के तौर पर बाद में हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है। परन्तु अन्य विद्वानों का मत भिन्न है तथा निर्देशक और विदूषक दोनों की अपनी कार्य-शैली एवं व्यवहार में पर्याप्त अंतर है। वर्तमान रंगमंचीय अवधारणा में निर्देशक एक महत्वपूर्ण तत्व बन कर उभरा है। भारतीय रंगमंच में पिछले कुछ दशकों से निर्देशक का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। देश के विभिन्न क्षेत्रों से कई प्रतिभाशाली निर्देशक सामने आये, साथ ही रंगमंचीय तथ्यों यथा – मंच सज्जा, दृश्य-सज्जा, अभिनय में गति-विधान, वेशभूषा, प्रकाश संयोजन एवं पार्श्व-संगीत आदि सभी तत्वों पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा।

निर्देशक का अस्तित्व भारतीय रंगमंच में रहा हो या नहीं, परन्तु आज के रंगमंच की वास्तविकता यही है कि निर्देशक के बिना किसी कृति को मंच पर प्रस्तुत करना लगभग असंभव है। निर्देशक वह व्यक्ति होता है जो किसी नाट्याकृति को उठाता है तथा उसे विभिन्न मंचीय प्रक्रियाओं से गुज़ारकर, एक जीवन की भांति दर्शकों के समक्ष रख देता है। हिंदी रंगमंच के विकास और उसके सकारात्मक परिवर्तनों में हिंदी रंगमंच के कई प्रतिभाशाली निर्देशकों का हाथ रहा है। आज का दर्शक वर्ग नाटक या अभिनेता को देखने के बजाए निर्देशकों की रंगमंचीय कुशलता को देखने भी जाने लगे हैं। हिंदी रंगमंच के पास अपने अनेक कुशल निर्देशक हैं,

जिन्होंने रंगमंच के क्षेत्र में विशेष ख्याति अर्जित की। इन निर्देशकों में कलकत्ता के प्रसिद्ध अभिनेता-निर्देशक श्यामानंद जालान का अपना विशेष महत्त्व है।

श्यामानंद जालान का हिंदी रंगमंच के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिस समय उनका रंगमंच पर पदार्पण हुआ था, उस समय वे विद्यार्थी थे। जालान ने कलकत्ता जैसे अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी रंगमंच की स्थापना की तथा अपने नाटकों के लिए दर्शक वर्ग का भी निर्माण किया। यह कार्य इसलिए भी अधिक महत्त्व रखता है, क्योंकि तत्कालीन समाज में रंगमंच के लिए दर्शक तो था; परन्तु वह दर्शक या तो पाश्चात्य रंगमंच का था या बंगला रंगमंच का। ऐसे स्थान पर हिंदी रंगमंच की स्थापना करना और उसके लिए दर्शक जुटाना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि ही मानी जाएगी। जालान ने अपने प्रारम्भिक दिनों में कलकत्ता की प्रसिद्ध संस्था– तरुण संघ का के साथ कार्य किया। इसके पश्चात् 'अनामिका' नाट्य-संस्था की स्थापना में भी अहम् भूमिका का निर्वाह किया। यह उनकी रंग- यात्रा का विकासात्मक चरण रहा, जिसके कारण उन्हें हिंदी के जाने-माने निर्देशकों गिना जाता है। इस चरण में किये गये उनके प्रदर्शन 'अनामिका' तथा निर्देशक एवं अभिनेता के तौर पर उनके सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कहे जाते है।

'अनामिका' नाट्य संस्था के लिए किये गये उनके प्रदर्शनों में 'हम हिन्दुस्तानी हैं', *'जनता का शत्रु'*, *'घर-बाहर'*, *'छपते-छपते'*, *'मादा कैक्टस'*, *'शुतुरमुर्ग'*, *'एवम् इन्द्रजित'*, *'आषाढ़ का एक दिन'*, *'लहरों के राजहंस'*, *'आधे अधूरे'*, *'पंछी ऐसे आते हैं'*, *'पगला घोड़ा'* आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछेक एकांकियों का भी प्रदर्शन किया। जिनमें *'संगमरमर पर एक रात'*, *'सत्य किरण'*, *'पाटलिपुत्र के खण्डहर में'*, *'नदी प्यासी थी'*, *'नवजोती की नयी हीरोइन'*, *'नीली झील'* तथा '*कामायिनी*' की नाट्य प्रस्तुति प्रमुख प्रस्तुतियां रहीं। इन सभी नाटकों का उन्होंने निर्देशन किया तथा लगभग सभी में अभिनय भी किया। 1972 में श्यामानद जालान ने 'पदातिक' नामक नाट्य-संस्था की स्थापना की। पदातिक के लिए की गयी प्रस्तुतियों में *'गिधाड़े'*, *'सखाराम बाइंडर'*, *'हजार चौरासी की माँ'*, *'आधे अधूरे'*, *'अभिज्ञानशाकुन्तम्'*, *'कन्यादान'* आदि पदातिक संस्था के साथ की गयीं उनकी प्रमुख नाट्य-प्रस्तुतियां हैं। श्यामानन्द जालान टेलीविज़न तथा सिनेमा दोनों के लिए कार्य किया। श्यामानंद जालान को 'संगीत नाटक अकादमी' द्वारा

सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने देश-विदेश में होने वाली परिचर्चाओं में भाग लिया।

जालान स्वयं को नाटककार का निर्देशक मानते थे, उन्होंने कभी भी नाटक में स्वयं परिवर्तन नहीं किया। जहाँ कहीं उन्हें परिवर्तन की आवश्यकता का भान होता था, वे सीधे नाटककार से पूछते थे; यही कारण है कि हिंदी रंगमंच के इतिहास में श्यामानंद जालान और मोहन राकेश का सम्बन्ध नाटककार और निर्देशक के सकारात्मक संबंधों का सर्वोत्तम उदाहरण है।

इस लघु शोध प्रबंध का विषय **'निर्देशक श्यामानंद जालान के व्यक्तित्व एवं रंग-प्रयोग तथा हिंदी रंगमंच में उनका योगदान (विशेष सन्दर्भ : मोहन राकेश के नाटक)'** है। इस विषय का चुनाव करने का मुख्य कारण यह रहा है कि अपने स्नातकोत्तर अध्ययन के समय से ही निर्देशक, रंगमंच की रचना-प्रक्रिया, आदि ने मुझे इस विषय का चुनाव करने के लिए प्रेरित किया। इस विषय को चुनने का एक कारण यह भी रहा है कि मोहन राकेश के नाटकों ने मुझे बहुत प्रभावित किया तथा अध्ययन के दौरान मोहन राकेश और श्यामानंद जालान का *'लहरों के राजहंस'* के प्रदर्शन को लेकर जो संवाद हुआ। इस संवाद को पढ़कर मैंने श्यामानंद जालान के विषय में पढ़ना शुरू किया। जब मैंने इस विषय का अध्ययन प्रारंभ किया, उसके पश्चात् श्यामानंद जालान और उनके नाटकीय प्रयोगों से मैं अवगत होती गयी।

मोहन राकेश के नाटकों के विषय में भी इस लघु शोध प्रबंध में विस्तार से चर्चा की गयी है। इस लघु शोध प्रबंध में मुख्यतः राकेश के नाटकों और श्यामानंद के अभिनय एवं निर्देशकीय पक्ष को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।मोहन राकेश के तीनों नाटकों – 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' तथा 'आधे अधूरे' पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया है तथा श्यामानंद जालान द्वारा किये गये इन नाटकों के प्रदर्शन का भी विवरण दिया गया है।

इस लघु शोध प्रबंध में अपने विषय को स्पष्ट करने हेतु, इसे मुख्यतः चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसके प्रथम अध्याय का शीर्षक 'हिंदी रंगमंच: एक पृष्ठभूमि' है, इस अध्याय में हिंदी रंगमंच के स्वरुप पर चर्चा की गयी है। इसके अतिरिक्त हिंदी रंगमंच पर विशेष रूप से प्रभाव डालने वाले रंगमंचों में – संस्कृत रंगमंच, पारसी रंगमंच, बंगला रंगमंच का परिचय देते हुए हिंदी रंगमंच के विकास में इन रंगमंचों की भूमिका क्या रही है? इसका भी विवरण दिया गया है।

द्वितीय अध्याय कलकत्ता के प्रसिद्ध अभिनेता-निर्देशक श्यामानंद जालान के परिचय से संबंधित है। इस अध्याय में, श्यामानंद के व्यक्तित्व, निर्देशक तथा अभिनेता के रूप में श्यामानंद जालान द्वारा की गईं मंच-प्रस्तुतियों का परिचयात्मक विवरण दिया गया है। इसके साथ ही उनके जीवन में 'तरुण संघ', 'अनामिका' तथा 'पदातिक' आदि संस्थाओं की क्या भूमिका रही ? इसका भी उत्तर दिया गया है।

तृतीय अध्याय में, हिंदी रंगमंच में श्यामानंद जालान का क्या योगदान रहा है? इस विषय पर विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त हिंदी रंगमंच के विविध पहलुओं की भी चर्चा करते हुए, उन सभी पक्षों पर जालान के विचारों को भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

सबसे अंतिम, चतुर्थ अध्याय मोहन राकेश के नाटकों और श्यामानंद जालान के रंगकर्म से संबंधित है। इस अध्याय में, मोहन राकेश के तीनों नाटकों का अध्ययन किया गया है तथा श्यामानंद जालान द्वारा किये गये इन नाटकों के मंचन पर भी विचार किया गया है। इस अध्याय में जालान के निर्देशन में क्या-क्या परिवर्तन किये गये, उनमें क्या नई रंग-युक्तियो का प्रयोग किया गया? इस पर विस्तार से चर्चा की गयी है। अंत में, कुछ पृष्ठों का निष्कर्ष भी दिया गया है, साथ ही विषय से संबंधित जिन पुस्तकों, समाचार पत्र-पत्रिकाओं का भी पूरा विवरण दिया गया है ताकि भविष्य में किसी अन्य शोधार्थी को आवश्यकतानुसार सहायता मिल सके।

इस लघु शोध में विवरणात्मक, वैज्ञानिक, व्याख्यात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। लघु शोध कार्य के लिए विभिन्न विद्वानों के लेखों, विभिन्न पुस्तकों और विभिन्न वेवसाइट्स का उपयोग किया गया है। उन सभी का विवरण सन्दर्भ ग्रन्थ में दे दिया गया है। अतः इस विषय से संबंधित सभी महत्वपूर्ण तत्वों का उल्लेख कर दिया गया है। अंत में, यही कहना चाहूंगी कि लघु शोध प्रबंध शोध के लिए निर्धारित सभी मानदंडों को ध्यान में रख कर पूर्ण किया गया है।